8. अनमोल वचन

दोहा अपने आप में बहुत गहरे अर्थ को समेटे हुए होता है। आओ, कबीरदास और रहीमदास के कुछ दोहे प

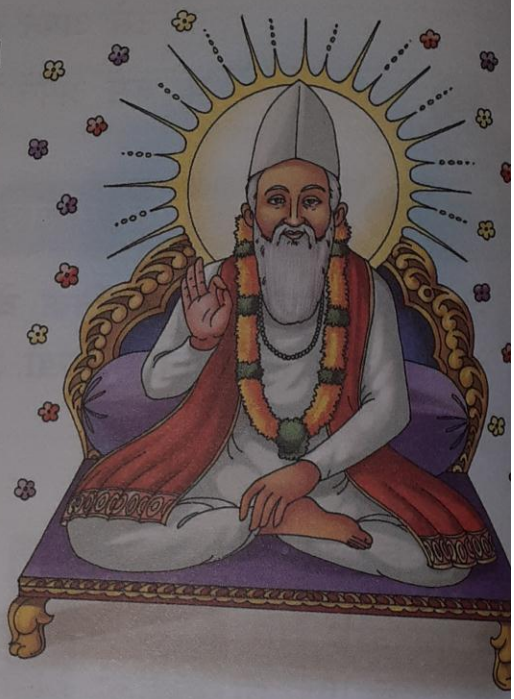

ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करे, आपहुँ सीतल होय।।1।।

वृच्छ कबहुँ नहि फल भखैं, नदी न संचै नीर।
परमारथ के कारने, साधुन धरा शरीर।।2।।

काल्ह करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करेगो कब।।3।।

–कबीरदास

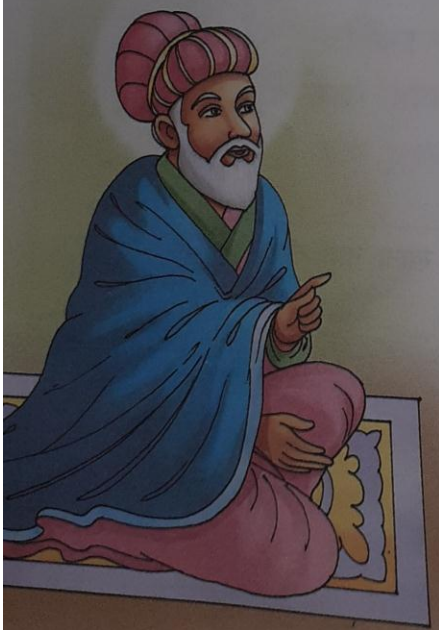

रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय।
सुनि इठलैहैं लोग सब, बांटि न लैहे कोय।।1।।

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना जुरे, जुरे गाँठ परी जाय।।2।।

रूठे सुजन मनाइए, जो रूठे सौ बार।
रहिमन फिरि-फिरि पोइए, टूटे मुक्ताहार।।3।।

–रहीमदास

अभ्यास

शब्दार्थ–

बानी	वाणी	**वृच्छ**	पेड़
भखैं	खाएँ	**संचै**	एकत्र करना
परमारथ	दूसरों के लिए किया जाने वाला कार्य	**साधुन**	अच्छे लोग
धरा	धारण किया	**काल्ह**	कल
परलै	प्रलय	**बहुरि**	फिर
बिथा	दुख	**इठलैहैं**	मज़ाक उड़ाना, इतराना
जुरे	जुड़े	**सुजन**	अच्छे लोग
फिरि-फिरि	बार-बार	**पोइए**	पिरोइए
मुक्ताहार	मोतियों के हार		

पाठ को समझें

1. दोहों के आधार पर सही अर्थ पर ✓ लगाओ–

क. नदी न संचै नीर–

- नदी खेत नहीं सीचती है ☐
- नदी प्यार बरसाती है ☐
- नदी आग बुझाती है ☐
- नदी अपना पानी स्वयं नहीं पीती ☐

ख. काल्ह करै सो आज कर–

- काम आज और कल करो ☐
- काम कम समय में करो ☐
- जो कल करना है, उसे आज करो ☐
- काम अपनी मर्ज़ी से करो ☐

ग. सुनि इठलैहैं लोग सब–

- लोग सुनकर देखभाल करेंगे ☐
- लोग सुनकर मज़ाक उड़ाएँगे ☐
- लोग सुनकर दुखी होंगे ☐
- लोग सुनकर चुप हो जाएँगे ☐

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो–

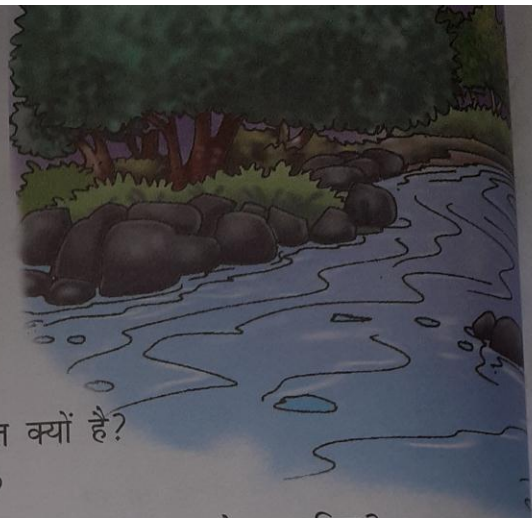

मौखिक–

क. वृक्ष और नदी क्या नहीं करते?

ख. हमें किसी से भी अपने संबंध क्यों नहीं खराब करने चाहिए?

ग. हमें कैसी वाणी बोलनी चाहिए?

लिखित–

क. मन की व्यथा को मन में रखना उचित क्यों है?

ख. साधुओं ने शरीर क्यों धारण किया है?

ग. जो सज्जन हमसे रूठ गए हैं, उन्हें फिर से क्यों मना लेना चाहिए?

घ. हमें अपना काम कब करना चाहिए?

भाषा को समझें

1. शब्द के शुद्ध रूप पर ✓ लगाओ–

क.	बानी	–	वानी ☐		वाणी ☐
ख.	वृच्छ	–	वृक्ष ☐		वृक्च्छ ☐
ग.	सीतल	–	शीतल ☐		सितल ☐
घ.	परलै	–	परलए ☐		प्रलय ☐
ङ.	कोय	–	कोइय ☐		कोई ☐

2. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बताओ–

क. वृक्ष – .....

ख. धागा – .....

ग. साधु – .....

घ. गाँठ – .....

ङ. नदी – .....

च. प्रलय – .....